www.thearyasamaj.org

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 73 अंक : 40
सृष्टि संवत् 1960853117
1 जनवरी, 2017
दयानन्दाब्द 193
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

साप्ताहिक आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

जालन्धर

वर्ष–73, अंक : 40, 29 दिसम्बर–1 जनवरी 2017 तदनुसार 18 पौष सम्वत् 2073 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

मनुष्य बन

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

(गतांक से आगे)

सभी ईश्वरवादी ईश्वर को 'पिता' मानते हैं। वेद इससे भी आगे जाता है। वह ईश्वर को पिता के साथ माता भी मानता है, यथा–**'त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अधा ते सुम्नमीमहे॥'** [ऋ० ८।९८।११] अर्थात् सबको ठिकाना देने वाले! सचमुच तू हमारा पिता है, जीवों की उत्पत्ति आदि नानाविध कर्म करनेवाले परमात्मन्! तू हमारी माता है, अतः हम तेरा हृदय good wishes चाहते हैं। माता-पिता की शुभाशी: शुभकामना सन्तान का कितना कल्याण करती है! परमपिता दिव्य माता की भव्यभावना हमारा कितना इष्ट कर सकती है, इसकी पूरी कल्पना कौन कर सकता है?

प्रभु हमारे माता-पिता हैं और हम उसकी सन्तान, किन्तु कुसन्तान, जघन्य सन्तान, अयोग्य सन्तान, विद्रोही सन्तान। हम आपस में लड़ते हैं। भाई-भाई की लड़ाई! भगवान् ने कहा था–**'सं गच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्'** [ऋ० १०।१९१।२]=तुम्हारी चाल एक हो, तुम्हारा बोल एक हो, तुम्हारा विचार एक हो। हमारी चाल आज भिन्न-भिन्न ही नहीं, परस्पर विरुद्ध भी है। आज हम संवादी नहीं, विवादी हो गये हैं। आज हम 'संवाच' नहीं 'विवाच' हो गये हैं।

इसका कारण हमारा 'वैमनस्य'=मनोभेद=मतभेद=विचारभेद है। एक चाल=संगति, एक बोल=समुक्ति के लिए 'सौमनस्य'=मन की एकता=मत की अभिन्नता=विचार की समता की आवश्यकता है। पिता का आदेश है, माता का सन्देश है=**'सं गच्छध्वम्'**, हम उसके विपरीत चलकर पिता का अधिकार, माता का प्यार, कैसे पा सकते हैं! मानव! ठहर! सोच तू कहाँ चला गया? कहाँ भटक गया?

मैं भटक गया! बहक गया! वज्र भान्ति! ईश्वर-ईश्वर कह रहे हो, कहाँ है ईश्वर? जब ईश्वर ही नहीं, तब उसका माता-पिता होना कैसे? और हम सब मनुष्य 'भाई-भाई' कैसे? **'सति कुड्ये चित्रम्'**! आधार होगा तो चित्र बनेगा!

अच्छा! ईश्वर को ही जवाब! जाने दो, तुम्हारा मन ईश्वर को नहीं मानता, न सही। भगवान् का मानना बड़े भाग्य की बात है, किन्तु भगवान् को न मानकर भी मानव मानव का भाई है।

कैसे! सुनो! सावधान होकर सुनो! तुम दो की सन्तान हो ना? घबराने क्यों लगे? इसमें अचम्भे की बात ही क्या है? माता पिता के संयोग से ही मनुष्य की उत्पत्ति होती है। अकेली स्त्री से सन्तान नहीं हो सकती। अकेले पुरुष से कुछ नहीं बनता। सृष्टि चलाने के लिए स्त्री-पुरुष, रयि-प्राण का संयोग आवश्यक है, अर्थात् दो मिले तो तुम एक आये, अर्थात् दो का रुधिर आया, और ये दो भी तो दो-दो की सन्तान हैं, अर्थात् हम में चार का रधिर आया। उन चार के जो और सन्तान हुई, उनमें भी उनका रुधिर आया। कहो, वे और तुम सब सपण्डि हुए या नहीं। तनिक और आगे चलो, वे चार आठ के सन्तान, वे आठ सोलह की, इस प्रकार ज्यों-ज्यों ऊपर को जाओगे, अपने खून का सम्बन्ध बढ़ता हुआ पाओगे।

कहो, हुए न हम भाई-भाई ? बताओ, भाई-भाई का व्यवहार कैसा होना चाहिए ? क्या भाई भाई का गला काटे, यह अच्छा है अथवा भाई के पसीने के बदले अपना खून बहाये यह अच्छा है ? भाई को भाई से भय नहीं होता। भाई को अपने से अभिन्न माना जाता है। डर होता है दूसरे से–**'द्वितीयाद्वै भयं भवति'**–भाई को देखते ही हृदय हर्षित हो उठता है। आ ! सारे संसार को भाई बना। भय को भगा। सर्वत्र निर्भय-निष्कण्टक आ और जा।

(स्वाध्याय संदोह से साभार) क्रमशः

वर्ष 2017 के नए कैलेण्डर मंगवाए

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, चौक किशनपुरा जालन्धर द्वारा प्रति वर्ष हजारों की संख्या में नव वर्ष के कैलेण्डर महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ देसी तिथियों सहित छपवाए जाते हैं। गत कई वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर आर्य जनता को उपलब्ध करवा रही है। इसी प्रकार सन् 2017के महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र वाले कैलेण्डर भी आधे मूल्य पर आर्य जनता को दिए जाएंगे। पिछले वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी कैलेण्डर का मूल्य चार रुपये प्रति तथा 400 रुपए सैकड़ा रखा गया है। इसलिये सभी आर्य समाजें, शिक्षण संस्थाएं व आर्य बन्धु शीघ्र अति शीघ्र कैलेण्डर सभा कार्यालय से मंगवा कर अपने सदस्यों व इष्ट मित्रों में वितरित करें। कार्यालय का समय प्रातः 10.00 बजे से सायं 5 बजे तक है। रविवार को अवकाश रहता है इसलिये समय पर अपना व्यक्ति भेज कर कैलेण्डर मंगवाएं।

-प्रेम भारद्वाज सभा महामंत्री

www.thearyasamaj.org

पाश्चात्य तथा वैदिक संस्कृत

ले० वेदाचार्य डॉ. रघुवीर वेदालंकार पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष, रामजस कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

वस्तुतः संस्कृति में किसी भी प्रकार का भेद होता ही नहीं। मानव को सभी दृष्टियों से पूर्ण विकसित करके उसे मानव से देव तथा ऋषि बनाने की पद्धति का नाम ही संस्कृति है तथा समूचे विश्व के लिए एक ही होगी, पृथक-पृथक नहीं। वेद सर्वप्राचीन ग्रन्थ हैं, अतः वेदाधारित संस्कृति ही परिपूर्ण, सार्वभौमिक तथा सार्वकालिक है। इसी के लिए वेद स्वयं कहता है-**सा प्रथमा संस्कृतिविश्ववारा**। वैदिक संस्कृति विश्ववारा अर्थात् सम्पूर्ण विश्व के लिए है। यहां पर लोक में प्रचलित पाश्चात्य तथा भारतीय या वैदिक संस्कृति शब्दों का प्रयोग सुविधा की दृष्टि से किया जायेगा।

इन दोनों में एक अन्तर्मुखी है तो दूसरी बहिर्मुखी। यह अन्तर इसलिए कि भारतीय शरीर के अतिरिक्त शरीर के अन्दर विद्यमान आत्मा की सत्ता भी मानते हैं तथा परमात्मा की भी। इसके विपरीत पाश्चात्य संस्कृति में आत्मा-परमात्मा दोनों का ही कोई स्थान नहीं। वहां पर तो शरीर ही सब कुछ है। इसलिए पाश्चात्य संस्कृति व्यक्ति में मानवीय गुणों को उजागर करती हुई भी शरीरपरक है। इसीलिए वह बहिर्मुखी है। जबकि वैदिक संस्कृति अन्तर्मुखी इसलिए है कि वह न केवल आत्मा तथा परमात्मा की सत्ता को स्वीकार ही करती है, इनके साक्षात्कार का मार्ग भी बतलाती है। वैदिक संस्कृति में हमारा शरीर इन दोनों तत्वों के साक्षात्कार का माध्यम या साधन मात्र है। आत्मा तथा परमात्मा की आवाज़ को दबाकर केवल शरीर के लिए ही कार्य करने का वैदिक संस्कृति निषेध करती है। जबकि धन कमाना तथा धन के आधार पर नाना प्रकार के सुखों का उपभोग करना ही पाश्चात्य संस्कृति का लक्ष्य है। क्योंकि वहां पर आत्मा तथा परमात्मा नाम की कोई सत्ता स्वीकार ही नहीं की गई। आत्मा तथा परमात्मा की सत्ता को स्वीकार करने या स्वीकार न करने से जीवनशैली तथा जीवन के लक्ष्य में महान् अन्तर आ गया। भारतवर्ष इस प्रकार का शरीर केन्द्रित देश न बन जाए, इसी उद्देश्य से न्यायदर्शन आदि शास्त्रों में ठोस प्रमाणों के आधार पर आत्मा की सत्ता का प्रतिपादन किया गया है। बस, इसी आधार पर पाश्चात्य तथा भारतीय जीवन शैली बदल गई।

1. **शिक्षा**-बच्चा बड़ा होकर शिक्षणालय जाता है। वहां भी इसका वेदारम्भ संस्कार इसी उद्देश्य से किया जाता है तथा शिक्षा की समाप्ति पर स्नातक बनने पर आचार्य उसे समावर्त्तन संस्कार पर पुनः **'सत्यं वद धर्मं चर सत्यान्न प्रमदितव्यम्, धर्मान्न प्रमदितव्यम्'** का उपदेश उसके भावी जीवन को सुसंस्कृत बनाने के लिए ही देता है जबकि पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली में समारोह करके केवल उपाधियां वितरित कर दी जाती हैं। उसके भावी जीवन को धार्मिक, नैतिक तथा सुसंस्कृत बनाने के लिए कोई उपदेश नहीं दिया जाता।

2. **शिक्षा का उद्देश्य**-वस्तुतः भारतीय तथा पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली के उद्देश्य ही पृथक्-पृथक् हैं। प्राचीन वैदिक शिक्षा प्रणाली व्यक्ति को उसके चार पुरुषार्थों-धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष को प्राप्त कराने वाली है जबकि पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य केवल अच्छे अंक लेकर परीक्षा उत्तीर्ण करके नौकरी प्राप्त करना तथा धन कमाना ही है। वैदिक शिक्षा प्रणाली से बच्चे का शारीरिक, बौद्धिक तथा आत्मिक विकास होता है जबकि पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली केवल बौद्धिक विकास करती है। आज भारतीय भी इसी शिक्षा प्रणाली को श्रेष्ठ समझकर प्राचीन शिक्षा प्रणाली की अवहेलना तथा उपहास करते हैं।

3. **विवाह**-शिक्षा की समाप्ति पर विवाह का क्रम है। यहां भी वैदिक विवाह पद्धति तथा पाश्चात्य पद्धति में महान् अन्तर है। वैदिक पद्धति में पति-पत्नी का सम्बन्ध आजीवन होता है। विवाह का उद्देश्य भी अपने से भी अधिक समुन्नत सन्तान को जन्म देकर समाज एवं राष्ट्र के लिए समर्पित करना है। वेद **'मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्'** इसी दृष्टि से कह रहा है कि हम दिव्य अर्थात् अपने से भी उत्कृष्ट सन्तान उत्पन्न करें। वैदिक विवाह के अनुसार पति-पत्नी दोनों इस प्रकार मिल जाते हैं। जिस प्रकार दूध तथा पानी। उनके हृदय, मन, मस्तिष्क आदि सभी एक दूसरे के अधीन होते हैं।

इसके विपरीत पाश्चात्य पद्धति में विवाह का उद्देश्य शारीरिक सुख की प्राप्ति या काम की सन्तुष्टि तथा स्वल्प रूप में सन्तान प्राप्ति भी है। इसके आगे उनके सामने विवाह का कोई उद्देश्य या प्रतिबन्ध नहीं है। यही कारण है कि उनके वैवाहिक सम्बन्ध कभी भी टूट जाते हैं तथा अन्यों के साथ स्थापित हो जाते हैं। आजकल तो विवाह जैसी संस्था को भी अनावश्यक बतलाकर Live in Relation के अनुसार रहना प्रारम्भ कर दिया जा सकता है तथा नये-नये व्यक्तियों के साथ पुनः ही सम्बन्ध बनाया जा सकता है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि भारतीय न्यायालय ने भी इस पाशविक व्यवहार पर प्रामाणिकता की मुहर लगा दी है। एक न्यायाधीश ने तो इसके समर्थन में भी राधा-कृष्ण का उदाहरण भी दे डाला कि वे भी इसी प्रकार रहते थे। खेद है कि उक्त माननीय न्यायाधीश का भगवान् कृष्ण के ब्रह्मचर्य तथा तपस्यायुक्त जीवन का पता नहीं। न ही उन्हें यह पता कि कृष्ण का राधा से कोई सम्बन्ध नहीं था। उनकी पत्नी रुक्मणी थी।

4. **गृहस्थ जीवन**-यहां भी पाश्चात्य तथा वैदिक संस्कृति के उद्देश्य तथा कर्त्तव्य भिन्न-भिन्न हैं। वैदिक संस्कृति में सन्तान का पालन करना, उसे शिक्षा दिलाना तथा सुसंस्कृत मानव बनाना माता-पिता का उद्देश्य है। इसके साथ ही अपने वृद्ध माता-पिता की सेवा करना भी धर्म है। पाश्चात्य संस्कृति इन्हें अनिवार्य नहीं मानती। यही कारण है कि वहां बच्चों को मैट्रिक तक शिक्षा दिलाकर आगे की शिक्षा का भार बच्चे पर ही छोड़ देते हैं। तथा वृद्ध माता-पिताओं के लिए वहां Old Age Home बने हुए हैं जहां जाकर बूढ़े, असहाय माता-पिता अपना जीवन यापन करते हैं। भारत में भी पाश्चात्य प्रभाव के कारण ऐसा होने लगा है जो वस्तुतः दुर्भाग्यपूर्ण है। वैदिक संस्कृति में ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास इन चार आश्रमों की व्यवस्था इसीलिए की गयी है कि गृहस्थ जीवन भोगकर पचास वर्ष पूर्ण होने पर व्यक्ति स्वेच्छा से ही गृह त्याग करके आत्म कल्याण तथा संसार के उपकारार्थ अपने आप को समर्पित कर दे। व्यक्ति के पूरे जीवन के लिए इससे अच्छी तथा सर्वोपकारक व्यवस्था विश्व में कहीं नहीं मिलेगी।

5. **दण्ड**-वैदिक संस्कृति में बच्चों को कुमार्ग तथा दुर्गुणों से दूर रखने के लिए ताड़ना तथा प्रेम पूर्वक स्वल्प दंड को भी आवश्यक माना गया है। महा भाष्य में लिखा है-

लालनाश्रमिणो दोषाः ताडनाश्रमिणो गुणाः।

अर्थात् अनावश्यक लाड-प्यार करने से संन्तान बिगड़ जाती है। तथा ताड़ना करने से दुर्गुणों को त्याग कर सद्गुणों का धारण करती है। पाश्चात्य संस्कृति में बिल्कुल इसके उल्टा है। अमेरिका आदि प्रगतिशील देशों में माता-पिता तथा अध्यापक लोग बच्चों को दण्ड देना तो दूर धमका भी नहीं सकते अन्यथा बच्चे पुलिस को बुलाकर मां-बाप को गिरफ्तार भी करा देते हैं। विदेशों की देखादेखी भारत में भी यह प्रवृत्ति पनपती जा रही है। जब परिवार में ऐसी भावना व्याप्त हो जाये तो सन्तानों को अच्छी शिक्षा देने का साहस कौन करेगा? फलतः बच्चा स्वच्छन्द जीवन जियेगा। उसे किसी का भय रहेगा ही नहीं। विदेशों में बच्चे इतने साहसी हो गये हैं कि, दैनिक 'नवभारत, टाइम्स' में छपी खबर के अनुसार, एक 10 वर्ष की लड़की ने अपनी 61 वर्ष की दादी को कुल 99 पैसे में नीलाम करने की घोषणा आक्शन वेबसाईट पर कर दी।

6. **आहार**-अच्छा स्वादिष्ट आहार सभी खाना चाहते हैं किन्तु यहां भी पाश्चात्य तथा भारतीय भोजन प्रणाली तथा उद्देश्य में भेद है। प्राचीन शास्त्रों के अनुसार हमारे भोजन का प्रभाव न केवल हमारे शरीर पर ही पड़ता है अपितु मन तथा मस्तिष्क पर भी पड़ता है। इसीलिए कहा गया है-**आहार शुद्धौ सत्वशुद्धिः सत्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः**। अर्थात् आहार के शुद्ध होने से ही मन की शुद्धि होती है तथा मन शुद्ध होने पर ही स्मृति दृढ़ होती है। (क्रमश :)

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय......

महर्षि दयानन्द के प्रति स्वामी श्रद्धानन्द की श्रद्धा

23 दिसम्बर को सम्पूर्ण आर्य जगत में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस धूमधाम से मनाया गया। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का कार्यक्षेत्र हमेशा से ही श्रद्धा और विश्वास पर आधारित रहा है। जीवन के प्रथम चरण में जब मुन्शीराम ने स्वामी दयानन्द सरस्वती के दर्शन नहीं किए थे तब तक वे आस्थाहीन यहां-वहां भ्रमण करते रहे। बरेली में मुन्शीराम का स्वामी दयानन्द से प्रथम साक्षात्कार हुआ तो उसी क्षण उनके जीवन में परिवर्तन की शुरूआत हुई। मुन्शीराम वकालत कार्य करते हुए भी प्रसन्नतापूर्वक उस व्यवसाय के दुर्गुणों से बचते रहे और जब उन्होंने स्वामी दयानन्द के मिशन की पूर्ति के लिए कदम आगे बढ़ाया तो फिर यह ध्यान ही नहीं रहा कि मेरा व्यवसाय क्या है। सब व्यवसायात्मक कार्यों को पूरा करके शिक्षा के क्षेत्र में सूत्रपात किया। कौन जानता था कि उनके द्वारा लगाया गया कांगड़ी गांव में वह छोटा सा पौधा एक दिन विशाल व सुदृढ़ वटवृक्ष का स्थान ले लेगा और अनेक ज्ञानपिपासु पथिक उसकी अमृतमय छाया को प्राप्त कर तृप्ति का अनुभव करेंगे। स्वामी श्रद्धानन्द के अन्दर गुरूकुल के लिए कितनी श्रद्धा थी, इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने गुरूकुल के लिए अपनी सम्पत्ति का दान तथा उससे भी बढ़कर गुरूकुल कांगड़ी के लिए सर्वप्रथम अपनी सन्तानों का दान कर दिया। ये दो बातें सिद्ध करती हैं कि स्वामी श्रद्धानन्द अपने संकल्प पर कितने दृढ़ थे।

श्रद्धा उत्पादन सरल कार्य नहीं है। श्रद्धा प्राप्ति से पूर्व दो वस्तुओं का होना अनिवार्य है, व्रत और दीक्षा। बिना निश्चयात्मक शक्ति तथा कुशलता के हम कोई भी कार्य पूर्ण नहीं कर सकते। फिर स्वामी श्रद्धानन्द जैसे तमाम महापुरूषों ने तो पराक्रम तथा यश व विशालता से परिपूर्ण अनेक कार्य किए। स्वामी श्रद्धानन्द का सम्पूर्ण जीवन श्रद्धा से परिपूर्ण रहा है। स्वामी श्रद्धानन्द का सारा जीवन इसी को केन्द्रबिन्दु बनाकर चारों ओर घूमता है। सन्यास ग्रहण करते समय स्वयं उन्होंने यह बात स्वीकार की थी और कहा था कि आज तक मैं सारा जीवन ऋषि दयानन्द के चरणों में बिताने का प्रयास करता रहा हूं। इसीलिए मैं अपना नाम स्वामी श्रद्धानन्द रखना चाहता हूं। ऋषि चरणों में अपनी अगाध श्रद्धा को अभिव्यक्त करते हुए 1925 ई. में मथुरा जन्म शताब्दी के अवसर पर जो भावपूर्ण श्रद्धांजलि स्वामी जी ने अर्पित की थी, उसका एक-एक शब्द हृदय वीणा के तारों को छूने वाला है-

ऋषिवर! तुम्हें भौतिक शरीर त्यागे 41 वर्ष हो गए हैं परन्तु तुम्हारी दिव्य मूर्ति मेरे हृदय पटल पर अब तक ज्यों की त्यों अंकित है। मेरे निर्बल हृदय के अतिरिक्त कौन मरणधर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितनी बार गिरते-गिरते तुम्हारे स्मरण मात्र ने मरी रक्षा की है? तुमने कितनी गिरती हुई आत्माओं की काया पलट दी है? इसकी गणना कौन मनुष्य कर सकता है? बिना परमात्मा के जिनकी पवित्र गोद में तुम इस समय विचर रहे हो, कौन कह सकता है कि तुम्हारे उपदेशों से निकली अग्नि ने संसार में प्रचलित कितने पापों को दग्ध कर दिया है? परन्तु अपने विषय में कह सकता हूं कि तुम्हारे सहवास ने मुझे कैसी गिरती हुई अवस्था से उठा कर सच्चा जीवन लाभ करने योग्य बनाया है। मैं क्या था, क्या बन गया और अब क्या हूं, वह सब तुम्हारी कृपा का परिणाम है। भगवन्! मैं तुम्हारा ऋणी हूं, उस ऋण से मुक्त होना चाहता हूं। इसलिए जिस परमपिता की असीम गोद में तुम परमानन्द का अनुभव कर रहे हो, उसी से प्रार्थना करता हूं कि मुझे तुम्हारा सच्चा शिष्य बनने की शक्ति प्रदान करे!

स्वामी श्रद्धानन्द सच्चे अर्थों में युगपुरूष थे। वे जिधर को चलते थे समय उनके पीछे चलता था। जनता उनके संकेत पर चलने को कटिबद्ध थी। स्वामी श्रद्धानन्द ने सभी क्षेत्रों में ऋषि के मन्तव्यों, वचनों, लेखों तथा इच्छाओं को क्रियात्मक रूप देने का बीड़ा उठाया। ऋषि मन्त्रदाता थे तो स्वामी श्रद्धानन्द मन्त्र साधक थे। विदेशी शिक्षा प्रणाली के विरूद्ध आन्दोलन के रूप में उन्होंने गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना की और इस युग में एक बार पुनः ब्रह्मचर्याश्रम पद्धति के आदर्श को सजीव कर दिया। आर्य जाति की रक्षा के लिए भी उन्होंने प्रयास किया। धार्मिक तथा सामाजिक क्षेत्र के साथ-साथ स्वामी श्रद्धानन्द ने राजनीति के क्षेत्र में भी श्रद्धा और पूर्ण विश्वास के साथ कार्य किया। उनकी राजनैतिक गतिविधियां भी उतनी ही प्रभावशाली थी जितनी धार्मिक क्षेत्र की। राष्ट्र के स्वाधीनता आन्दोलन के इतिहास में उनका स्थान एक यशस्वी और सेनानायक के रूप में सुरक्षित है। गोरे शासकों के क्रूर अत्याचारों से आतंकित पंजाब कांग्रेस का अधिवेशन बुलाने का किसी में साहस नहीं हुआ तो स्वामी श्रद्धानन्द जी मैदान में उतरे और अमृतसर में कांग्रेस का ऐतिहासिक अधिवेशन आयोजित किया। वे स्वयं इस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष बनें और अपने साहस, परिश्रम और श्रद्धा से इस कार्यक्रम को सफल किया।

स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस मनाते हुए हम भी उनके श्रद्धामय जीवन से शिक्षा लेकर मानवता के कार्य करें। स्वामी श्रद्धानन्द ने सम्पूर्ण जीवन मानवता के लिए कार्य किया। अपनी संस्कृति, सभ्यता और मातृभूमि के लिए उन्होंने अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया। स्वामी श्रद्धानन्द जी सम्पूर्ण जीवन प्रेरणाओं से भरा हुआ है। स्वामी श्रद्धानन्द एक सच्चे कर्मयोगी थे। महात्मा गांधी जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धांजलि देते हुए कहा था कि स्वामी श्रद्धानन्द जी एक सुधारक थे। कर्मवीर थे, वाक्शूर नहीं। उसका जीवन जागृत विश्वास था। इसके लिए उन्होंने अनेक कष्ट उठाए थे। वे संकट आने पर कभी घबराए नहीं थे। वे एक वीर सैनिक थे। वीर सैनिक रोग शय्या पर नहीं, किन्तु रणांगन में मरना पसन्द करता है। स्वामी श्रद्धानन्द का केवल बलिदान दिवस मनाकर ही हम अपने कर्त्तव्य की इतिश्री न कर लें अपितु उन्होंने महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों पर चलते हुए मानवता के कल्याण के लिए जो-जो कार्य किए हैं, उन कार्यों को अपनाकर आर्य समाज की उन्नति के लिए कार्य करें। स्वामी श्रद्धानन्द जी जिस श्रद्धा के साथ अपना सर्वस्व त्याग कर कर्मक्षेत्र में उतरे थे उसी प्रकार हम भी त्याग भाव से महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों पर चलते हुए आर्य समाज के लिए कार्य करें।

प्रेम भारद्वाज, संपादक एवं सभा महामन्त्री

www.thearyasamaj.org

"आर्य समाज और महर्षि जी के सम्बन्ध में कुछ प्रश्नों के उत्तर"

-ले० पं० खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोबन्दि राय आर्य अण्ड सन्द १८० महात्मा गान्धी रोड़, (दो तल्ला) कोलकत्ता-700007

प्रश्न : आर्य शब्द का अर्थ क्या है ?

उत्तर : आर्य शब्द का अर्थ धर्मात्मा, सज्जन, हमेशा धर्म और न्याय के रास्ते पर चलने वाला और कर्त्तव्य का पालन करने वाला, शान्तचित्त और उदार चरित्र वाला मनुष्य होता है।

प्रश्न : इस विषय में कोई प्रमाण दीजिए

उत्तर : वशिष्ठ-स्मृति का निम्नश्लोक इस विषय को प्रतिप़ादित करता है :

कर्त्तव्यमाचरन् कार्यम्, अकर्त्तव्य मनाचरन्।

तिष्ठति प्रकृताचारे स तु आर्य इति स्मृत:।।

अर्थात् जो करने योग्य कामों को हमेशा करता रहे और बुरे कामों को कभी न कहे, ऐसे सदाचारी मनुष्य को आर्य कहते हैं। "शब्द कल्पद्रुम, वाचस्पत्य वृहदभिधान" आदि संस्कृत के प्रसिद्ध कोषों में "आर्य" शब्द के अर्थ "पूज्य, श्रेष्ठ, मान्य : उदारचरित, शान्तचित्त:, न्याय-पथावलम्बी, सततकर्त्तव्य कर्मानुष्ठाता, धार्मिक :, धर्मशील" इत्यादि दिए हैं।

प्रश्न : समाज शब्द का क्या अर्थ है ?

उत्तर : समाज शब्द का अर्थ समूह है, जो सम् + आ + अज अर्थात् जो मिलकर चारों ओर से प्रगतिशील हो और बुराईयों को दूर करने का प्रयत्न करें। आर्यों के समूह को आर्यसमाज के नाम से पुकारा जाता है, जो मिलकर सद्गुणों के प्रचार और दुर्गुणों तथा कुनीतियों के निवारण का सदा प्रयत्न करें।

प्रश्न : आर्य समाज की स्थापना किसने की और कब की ?

उत्तर : आर्य समाज की स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सब से प्रथम 7 अप्रैल 1875 में बम्बई नगर में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ और लोक उपकारार्थ की।

प्रश्न : आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म कब और कहाँ हुआ था।

उत्तर : महर्षि दयानन्द का जन्म गुजरात प्रान्त के टंकारा गाँव में सन् 1824 में हुआ।

प्रश्न : उनका पहला नाम क्या था ?

उत्तर : उनका पहला नाम मूल शंकर व दयाराम था। पर बोल-चाल में मूलशंकर ही कहा जाता था।

प्रश्न : मूल शंकर के माता-पिता का क्या नाम था ?

उत्तर : मूल शंकर के पिता का नाम कर्शन जी तिवाड़ी तथा माता का नाम अमृतबेन था।

प्रश्न : कर्शन जी क्या काम करते थे।

उत्तर : कर्शन जी एक बड़े जमीदार और बैंकर तथा मौरवी राज्य के एक अधिकारी थे।

प्रश्न : बालक मूलशंकर के दिल में ज्ञान का उदय कब हुआ और कब मूर्त्तिपूजा से चित्त हटा।।

उत्तर : जब बालक मूलशंकर लगभग 14 साल के थे तो शिव-रात्रि को उनके पिता जो कट्टर शिव-भक्त थे, उन्हें मन्दिर में ले गये। मूल जी ने शिव-रात्रि को रात-भर जागने और उपवास रखने का माहात्म्य सुना हुआ था। इसलिए सबके (यहाँ तक कि अपने पिता के) सो जाने पर भी आँखों पर पानी के छींटे डालकर वे जागते रहे। इतने में उन्होंने देखा कि एक चूहा महादेव जी की मूर्ति पर चढ़ा हुआ मिठाई को खा रहा था, फिर भी महादेव जी कुछ भी नहीं कर रहे थे। बालक के पवित्र, सरल हृदय में शंका उठी कि यह क्या बात है। जिस महादेव जी के बारे में पुराणों में कथाएं, त्रिपुरादि राक्षसों को त्रिशूल से मारने की बताई गई है, वे क्या एक छोटे से चूहे से भी अपनी रक्षा नहीं कर सकते ? बालक को जब इसका कोई जवाब नहीं सूझा तो उसने अपने पिता जी को जगाकर, अपना सन्देह उनके सामने रख दिया। उनसे भी इस प्रश्न का कुछ उत्तर न बना और वे मूल शंकर को धमकाने लगे कि तू ऐसी शंकाएं क्यों करता है ? पिता जी के उत्तर से बालक के दिल को ज़रा भी सन्तोष न हुआ और छोटी-सी आयु में ही उसने मन में यह निश्चय कर लिया कि जब तक वह सच्चे महादेव (परमेश्वर) का पता न लगा लेगा। तब तक आराम न करेगा। उसी दिन से सरल हृदय बालक का चित्त मूर्त्ति-पूजा से हट गया।

प्रश्न : कौन सी और घटनाएँ हुई जिन्होंने मूल जी के दिल में वैराग्य पैदा कर दिया और आख़िर में उन्हें घर छोड़ कर जाने को बाधित कर दिया।

उत्तर : जब मूल जी 14-15 साल के ही थे तो अचानक एक दिन उसकी छोटी बहिन को हैजा हो गया और अच्छी से अच्छी दवाई करने पर भी आराम न हुआ और वह मर गई। इस मौत को देखकर और सब तो जोर-जोर से रोने लगे पर बालक मूल जी एक कोने में खड़े होकर यही सोचते रहे कि किस तरह इस मौत से छुटकारा हो सकता है ? इसके दो साल बाद उसके चाचा की मृत्यु हो गई। वे मूल जी को बहुत प्यार करते थे। इससे उसका वैराग्य और भी दृढ़ हो गया और उसने, जैसे भी हो सके, मौत से छुटकारा पाने व अमर बनने का पक्का निश्चय कर लिया।

प्रश्न : मूल जी ने किस से और कब संन्यास लिया और उसका उस समय क्या नाम रखा गया।

उत्तर : मूल जी ने स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती नामक एक विद्वान् संन्यासी से लगभग 24 साल की आयु में संन्यास लिया और उस समय उसका नाम दयानन्द सरस्वती रखा गया।

प्रश्न : स्वामी दयानन्द के वे गुरू कौन थे जिनके विशेष प्रभाव से उन्होंने वैदिक धर्म के उद्धार करने का बीड़ा उठाया।

उत्तर : स्वामी दयानन्द के विशेष पूज्य गुरू स्वामी विरजानन्द जी थे, जो प्रज्ञाचक्षु थे और मथुरा में रहा करते थे। उन्हीं से दयानन्द जी ने वेद-वेदांगों को विशेष रूप से पढ़ा तथा उन्होंने ही दयानन्द जी से गुरू-दक्षिणा के तौर पर यह मांगा कि तुम सर्वत्र वेदों का प्रचार करो, ऋषियों के बनाए उत्तम ग्रन्थों को पढ़ने की लोगों को प्रेरणा दो तथा वेद-विरूद्ध सब बातों और रीति-रिवाजों को लोगों से छुड़वा दो।

प्रश्न : ऋषि दयानन्द ने विद्या समाप्त करके वैदिक धर्म के प्रचार और समाज सुधार के लिए क्या-क्या काम किये।

उत्तर : उन्होंने काशी आदि नगरों के बड़े-बड़े पण्डितों से मूर्त्ति-पूजा आदि विषयों पर शास्त्रार्थ किए, जगह-जगह पर विशेष कर कुम्भ आदि मेलों में वैदिक धर्म पर जोरदार व्याख्यान दिए, वैदिक धर्म के सिद्धान्तों की व्याख्या के लिए बहुत-से ग्रन्थ लिखे। जिनमें से निम्नलिखित अधिक प्रसिद्ध हैं:

(१) यजुर्वेद का संस्कृत में पूरा भाष्य किया जिसका पण्डितों ने पीछे हिन्दी का अनुवाद किया।

(२) ऋग्वेद का छ: मण्डल 62 सूक्त तक संस्कृत भाष्य।

(३) आर्याभि विनय-वैदिक प्रार्थनाओं की पुस्तक।

(४) सत्यार्थ प्रकाश

(५) ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका।

(६) संस्कार विधि

(७) भ्रमोच्छेदन, बड़े-विरूद्ध मत-खण्डन इत्यादि कई छोटी पुस्तकें।

(८) जीव-रक्षा और मांस-निषेध प्रचार के लिए गोकरूणा निधि। इस पुस्तक द्वारा तथा महारानी विक्टोरिया के नाम लाखों हस्ताक्षरों सहित आवेदन पत्र द्वारा गोवध को बन्द कराने का भी महर्षि ने प्रशंसनीय प्रयत्न किया।

यह लेख मैंने वैदिक धर्म आर्य समाज प्रश्नोत्तरी पुस्तक जो पं. धर्मदेव जी सिद्धान्तालंकार, विद्या-वाचस्पति द्वारा लिखित है। इसको विज्ञ पाठकों के लिए अति उपयोगी व लाभदायक समझकर लिखा है। इससे पाठकों को आर्य समाज और महर्षि सम्बन्धी काफी जानकारी बढ़ेगी।

www.thearyasamaj.org

माता अदीन व कर्मशील बनावें

ले. -डा. अशोक आर्य १०४ शिप्रा अपार्टमेंट, कौशाम्बी २०१०१० गाजियाबाद

अदिति के सम्बन्ध में वेद ने क्या वर्णन किया है ? इस का उत्तर वेद ने ही दिया है कि वह स्त्री जिस ने सब प्रकार की शिक्षाओं का यथावत ग्रहण किया हो अर्थात् वह वेद आदि शास्त्रों का स्वाध्याय कर पूर्ण विदुषी बनकर अपने इन गुणों को अपनी संतान में बांटने वाली हो। इस सम्बन्ध में वेद में अनेक मन्त्र दिए हैं। आओ यहाँ हम ऋग्वेद के एक अन्य मन्त्र के उपदेशों को इस सम्बन्ध में समझने का प्रयास करें :

अदितिः पात्वंहसः सदावृधा।।

ऋग्वेद ८.१८.६।।

मन्त्र संक्षेप में हमें उपदेश करते हुए कह रहा है कि माता सदावृधा होती है। माता सब को सदा बढ़ाने वाली होती है। इसलिए वह हमें भी आगे को बढ़ाती रहे किन्तु किस प्रकार आगे को बढ़ावे, हमारे कौन-कौन से गुणों को बढ़ाने का कार्य करे ? इस सम्बन्ध में मन्त्र की व्याख्या करते हुए कहा गया है कि वह हमें शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक रूप में आगे बढ़ाने का कार्य माता कराती है।

१. शारीरिक उन्नति : मानव जीवन की उन्नति के मुख्यरूप में तीन प्रकार माने गए हैं। इन तीन विधियों में से प्रथम का नाम है शारीरिक उन्नति। इस प्रकार की उन्नति सब प्रकार की उन्नतियों में से मुख्य उन्नति माना जा सकता है क्योंकि जिस व्यक्ति का शरीर पुष्ट नहीं है, वह पूर्णतया स्वस्थ नहीं है, वह अपने जीवन में कुछ भी नहीं कर सकता। शारीरिक दुर्बलता के कारण सदा रुआं सा रहते हुए शत्रु से सदा भयभीत, अध्यापक की मार से भयभीत, माता के व्यवहार से भयभीत, भाव यह कि अपने प्रत्येक व्यवहार और प्रत्येक क्रिया कलाप में सदा भयभीत सा ही डरता सा ही बना रहेगा। इस प्रकार का व्यक्ति न तो अपनी ही उन्नति कर सकता है और न ही अन्यों की उन्नति में सहायक हो सकता है। इसलिए मंत्र का उपदेश है कि माता सदा यह प्रयत्न करती है कि उसकी संतान सदा पुष्ट हो तथा वह उसे पुष्ट बनाने के वह सब उपाय भी करती है, जो ऋग्वेद के अनेक सूक्तों के अतिरिक्त अन्यत्र भी वेद के विभिन्न संदर्भों में प्राप्त होते हैं।

२. मानसिक उन्नति : मन मानव मात्र की शक्ति व दुर्बलता का केंद्र होता है। मन स्वस्थ है तो सदा प्रगति के ही उपाय सोचता है किन्तु मन के शिथिल होने, रोगाणु होने से यह मानव को अवनति के गर्त में धकेल देता है। एक व्यक्ति के पास अत्यंत उन्नत शस्त्र होते हुए भी मानसिक कमजोरी के कारण वह अपने से कमजोर शत्रु से भी पराजित हो जाता है। माता जब अपनी संतान का निर्माण करने का कार्य कर रही होती है तो मुख्य रूप से वह अपने बालक के मन को दृढ़ता देने का कार्य करती है ताकि वह कभी भी किसी भी दशा में मानसिक संताप का कारण बन कर प्रगति के मार्ग पर बाधा न बन जावे।

३. आत्मिक उन्नति : आत्मिक उन्नति तो मानव जीवन का आधार ही है। जो उन्नति हम आत्मा के माध्यम से कर सकते हैं, उसे आत्मा कहते है। मानव के शरीर में जब तक आत्मा है, तब तक ही वह मानव है, ज्यों ही आत्मा शरीर से अलग हो जाती है त्यों ही यह शरीर एक मिट्टी के ढेले के समान हो जाता है। हमारे परिजन तब तक ही इस शरीर को अपने साथ रखते हैं, जब तक इस में आत्मा है, ज्यों ही आत्मा इस शरीर से अलग हो जाती है, त्यों ही यह शरीर हमारे परिजनों के किसी उपयोग का नहीं रह जाता तथा वह शीघ्र ही इसे अपने से दूर करने के लिए उपाय करते हुए इस शरीर का अंतिम संस्कार करना चाहते हैं।

इससे स्पष्ट है कि आत्मा में कुछ विशेषताएं हैं, जिस के कारण परिजन इस आभा से युक्त शरीर की ही सेवा करते हैं। आत्मा रहित शरीर को अपने आस पास देखना भी पसंद नहीं करते। हमारे शरीर में जो आत्मा है, वह हमारे बहुत से संस्कार विगत जन्मों से लेकर आती है तथा बहुत से संस्कार अपने वर्तमान जन्म के संचित संस्कारों से भी प्राप्त करती है। आत्मा के पास अच्छे कर्मों का भण्डार अधिक है तो वह तत्काल रूप में अच्छे कर्मों का फल पाते हुए अच्छे काम करती है। यदि आत्मा के पास कुकर्मों की निधि अधिक है तो वह कुकर्मों के करने के लिए तत्काल रुप से अग्रसर होती है। माता यह प्रयास करती है कि उसकी संतानें अच्छे कर्म करते हुए अपने कर्मों के भण्डार में इन को स्थान देवें। जब अच्छे कर्म अधिक होंगे तो उनका फल भी एनी कर्मों की अपेक्षा पहले मिलने लगेगा और बुरे कर्मों का फल कुछ समय के लिए दूर हो जावेगा। इसलिए अच्छे कर्मों का आधिक्य बनाने का माता सदा प्रयास करती है।

मन्त्र कहता है कि माता जहां हमारी शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के उपाय करने वाली हो वहां हमारी माता अदीन, पाप रहित व स्वस्थ हो। इस प्रकार की माता हमें पाप कर्म करने से सदा बचाती रहे। हम जानते हैं कि कोई भी माता अपनी संतानों को कभी भी पाप मार्ग पर चलते नहीं देखना चाहती। वह अनेक उपाय करती है कि उसकी संतान पापाचरण से सदा दूर रहे। वह अपनी सन्तानों को सदा उत्तम मार्ग पर चलते हुए उत्तम कर्मों का संकलन करने की प्रेरणा देती है ताकि उसमें उत्तम कर्म बढ़ जावें तथा इनका फल भी शीघ्र ही मिलने लगे।

इस प्रकार मन्त्र यह बात स्पष्ट करता है कि माताओं का कर्तव्य है कि वह अपनी संतानों को सदा सब प्रकार से उन्नत बनाने वाली हो, उन्हें पापों से बचाते हुए निष्पाप बनाने वाली हो तथा अपनी संतानों को सर्वथा सब प्रकार से पवित्र बनाने वाली हो।

आर्य माडल स्कूल का वार्षिक उत्सव हर्षोल्लास से सम्पन्न

आर्य माडल सी.सै.स्कूल, बठिण्डा में शनिवार को वार्षिक पारितोषिक समारोह में बच्चों ने मनमोहक प्रस्तुतियां की। बच्चों द्वारा प्रस्तुत सेव चाईल्ड गर्ल्ज, सेव इन्वायरमैंट सेव ट्री ओल्ड एज होम ने आए हुए मेहमानों को सोचने पर मजबूर कर दिया। वही पर छोटे-2 बच्चों द्वारा प्रस्तुत कोरियोग्राफी ने सबको मन्त्रमुग्ध कर दिया। वहीं पर गिद्दे व भंगड़े ने सभी को नाचने पर मजबूर कर दिया।

कार्यक्रम की शुरुआत वैदिक रीति-रिवाज हवन यज्ञ व कार्यक्रम के विशेष अतिथि श्री कशिश गुप्ता M.D. व जालन्धर से विशेष तौर पर पहुंचे आर्य विद्या परिषद् रजि. (पंजाब) के रजिस्ट्रार एडवोकेट श्री अशोक परुथी के कर कमलों द्वारा ज्योति प्रज्वलित करके हुई। मेहमानों का स्वागत करते हुए सचिव श्री अश्विनी मोंगा जी ने मुख्य अतिथि व विशेष अतिथि का जीवन-परिचय दिया। इसके साथ ही उन्होंने स्कूल व आर्य समाज के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। वर्ष के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में विजेता विद्यार्थियों को इनाम वितरित करते हुए विशेष अतिथि डा. कशिश विजेताओं को बधाई देते हुए चल रही गतिविधियों की सराहना की। प्रधनाचार्य श्री विपिन गर्ग जी ने स्कूल की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी। इस दौरान उन्होंने वर्ष के दौरान हुई उपलब्धियों का उल्लेख किया। विशेष तौर पर पहुचें स्वामी सूर्यदेव ने बच्चों को अपना आर्शिवाद दिया। स्कूल सहसचिव श्री सुरिन्द्र कुमार जी ने आए हुए मेहमानों का धन्यवाद किया। मंच संचालन का कार्यक्रम श्री प्रविन्द्र कौर द्वारा बखूबी निभाया गया। इस अवसर पर उपप्रधान श्री गौरी शंकर, श्री रमेश गर्ग प्रबन्धक समिति व आर्य समाज के अन्य सदस्यगण शामिल हुए।

वेदवाणी

प्रभु की शरण में

उरुं नो लोकं अनुनेषि विद्वान् स्वर्वत् ज्योतिरभयं स्वस्ति।
ऋष्वात इन्द्र स्थविरस्य बाहू उपस्थेयाम शरणा बृहन्ता।।

-ऋ ६।४७।८; अथर्व० १९।१५।४

ऋषिः-**गर्गः**।। देवता-**इन्द्रः**।। छन्दः-**विराट्त्रिष्टुप्**।।

विनय-हे परम ईश्वर ! हे सब-कुछ जानने वाले ! तुम हमें ज्ञान देकर कभी अपने विस्तीर्ण-खुले, अपार लोक में पहुँचा देते हो-उस लोक में जहाँ कि आनन्द-ही-आनन्द है और ऐसा आनन्द है कि उसकी प्रतिक्रिया में दुःख, सन्ताप का जन्म नहीं हो सकता ; उस ज्योतिर्मय लोक में, जहाँ प्रकाश का साम्राज्य है और जहाँ विस्तीर्ण शुभ प्रकाश-सागर में अज्ञान व अन्धकार की छाया तक नहीं पड़ सकती, उस लोक में जहाँ परिपूर्ण अखण्ड अभयता है, इन भय के भूतों का जिनसे हम यहाँ हरदम सताये रहते हैं, जहाँ नामोनिशान नहीं है और उस लोक में जहाँ कि कल्याण-ही-कल्याण बरसता है, अकल्याण की जहाँ कल्पना तक नहीं हो सकती हे इन्द्र ! तुम ऐसे लोक के वासी हो। हम मनुष्यों को-जीवों को वहाँ ले-जा सकते हो ! हे मेरे स्वामिन् ! अपनी बाहुओं को फैला दो और अपनी महान् शरण में हमें ले-लो। हे महान् देव ! तुम्हारे ये बाहू सब पाप-ताप का ध्वंस करने वाले हैं, क्लेश-कष्ट का नाश करने वाले हैं, विघ्न-बाधाओं को हटाने वाले हैं। इनकी महान् शरण का आश्रय पाये हुए को दुःख, अज्ञान, भय व अकल्याण का स्पर्श भी कैसे हो सकता है ? अपने बाहू फैलाओ, करुणामय ! हमें उठाने के लिए अपने ये वात्सल्यमय बाहू बढ़ाओ जिससे कि हम तुम्हारी परम शरण में आ बैठें, वह गोद जिसमें बैठकर कोई क्लेश नहीं, भ्रम नहीं, भय नहीं, आमय नहीं।

www.thearyasamaj.org

देव दयानंद शरणं गच्छामि

-ले० अभिमन्यु कुमार खुल्लर 22, नगरनिगम क्वार्टर्स जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर 474001 मं. प्र.

ब्रह्मानंद, सच्चिदानंद के संसर्ग में मोक्षानंद रसपान करती हुई महर्षि दयानंद की आत्मा से सम्पर्क करने की मेरी अभिलाषा दिन व दिन बलवती होती गई। सम्पर्क करने का कोई उपाय न देखकर कम्प्यूटर का ध्यान आया। गूगल पर सब जानकारी मिल जाती है। पर वीड़ियो कन्फ्रेसिंग के लिये महर्षि दयानंद उपलब्ध नहीं हो सकेंगे। मैं तो उनसे आमने सामने बात करना चाहता हूँ। केवल उनसे ही। संकट में उन्हीं ने मुझे डाल रखा है।

कुछ समय परेशान रहा। अचानक मस्तिष्क ने सूचना दी कि कल्पनालोक में 'महर्षि दयानंद' से बात की जा सकती है। क्षणभर में ही महर्षि और मैं आमने सामने। महर्षि से कहा आपने बड़े संकट में डाल दिया है ?

मैं-आपके बताये ईश्वर के उन्नीस गुण-तत्वों। मानदण्डों में से केवल दो गुणतत्वों-निराकार और सर्वव्यापक से मुझे सर्वाधिक आपत्ति है।

महर्षि-इन दो गुणों से ही क्यों?

मैं-इन दो गुणों के कारण ही आप द्वारा समर्थित ईश्वर के लिये संभव हो पाया है कि वह इस पृथ्वी लोक में ही नहीं, अपितु अनंत ब्रह्माण्ड के कण-कण में समाया हुआ है।

महर्षि-ठीक-ठीक समझा तुमने।

मैं-आपका ईश्वर समस्त चेतन जगत् में, मानव/जीवात्मा के कर्मों का ही नियामक है, अन्य जीवों का नहीं। कर्म के अनुसार ही पक्षपात रहित न्याय से फल-सुख-दु:ख देता है। यह क्रम एक जन्म से दूसरे जन्म तक चलता रहता है। जब तक जीवात्मा मोक्ष को न प्राप्त कर लें। मोक्ष का रास्ता बड़ा कठिन-टेढ़ा है। आप यह भी मानते हैं कि ईश्वर की पूजा सर्वमान्य प्रचलित रूप में नहीं की जाती। उसकी स्तुति, प्रार्थना और उपासना की जानी चाहिये। यहीं नहीं, उसके गुण, कर्म और स्वभाव अपनाकर अपना चरित्र सुधारना चाहिये अन्यथा उसकी स्तुति, प्रार्थना और उपासना का कोई लाभ नहीं।

महर्षि-बहुत ठीक समझा तुमने।

मैं-बस, बहुत हो चुका। बहुत कठिन है आपके ईश्वर को साधना। मुझे आपका ईश्वर स्वीकार नहीं।

महर्षि-फिर किसे ईश्वर मानोगे?

मैं-किसी को भी। ब्रह्मा, विष्णु, शिव।

महर्षि-ठीक है। संस्कृत में 'धातु' से शब्दार्थ ग्रहण किया जाता है। अत: समस्त सृष्टि का निर्माण करने से 'ब्रह्मा', सर्वत्र व्यापक होने से 'विष्णु', कल्याण अर्थात् सुख देने वाला होने से उस परमात्मा को 'शिव' कहते हैं। ये तीनों विशेषण एक ही परमात्मा के हैं।

पुराण प्रतिपादित ब्रह्मा, विष्णु, शिव के ईश्वर परक अर्थ किये जाए तो तीन ईश्वर सिद्ध होते हैं जबकि ईश्वर एक ही है। ब्रह्मा की पूजा साधारणतया प्रचलन में नहीं है। पुष्कर-राजस्थान में उसका एक ही मंदिर है। शिव की पूजा नहीं होती। योनि आकार के पात्र में स्थापित शिवलिंग की पूजा होती है। क्या तुम शिवलिंग की पूजा ईश्वर मानकर करोगे ?

मैं-मेरा दिमाग घूम गया। चुप हो गया।

महर्षि-अधिकांशत: विष्णु की पूजा प्रचलन में नहीं है। उनके अवतारों की पूजा होती है। अवतार होने से ईश्वर 'अजन्मा' और 'अमर' नहीं हो सकता। सब जानते हैं अवतारों/महापुरूषों का जन्म हुआ और उनका स्वर्गवास भी हुआ। तुम उनके अवतारों की पूजा करोगे ?

मैं-हाँ।

महर्षि-उनकी पत्नि, बच्चों और सेवक की भी ?

मैं-आपका इशारा समझ रहा हूँ। श्रीराम भगवान हैं, सीता माता हैं और दास भाव में सेवा करने वाले हनुमानजी हैं। इन तीनों की पूजा-अर्चना करूँगा।

महर्षि-क्या इनकी पूजा पृथक-पृथक ईश्वर मानकर करोगे या इनमें एक ही ईश्वर है, ऐसा मानकर करोगे।

मैं-जिसकी मूर्ति के सामने खड़े होकर पूजा करते हैं, उसी में ईश्वर भाव रखकर पूजा की जाती है।

महर्षि-भागवत् के माखन चुराने वाले, गोपियों के साथ रास-लीला करने वाले श्रीकृष्ण की भी तुम पूजा करोगे ?

मैं-श्रीकृष्ण की पूजा का सर्वाधिक प्रचलित रूप यही तो है।

महर्षि-यह तो विष्णु के दो अवतारों की बात हुई। अभी बाईस अवतार और हैं। पौराणिक 33 करोड़ देवता मानते हैं। उनकी पूजा के लिये तुम्हें करोड़ो बार जन्म लेना पड़ेगा और मरना पड़ेगा।

मैं-आप डरा रहे हैं।

महर्षि-नहीं। मैं तो तुम्हारे ईश्वरों-देवताओं का परिचय करा रहा हूँ। अच्छा, यह बताओ कि इनमें से किसी एक ही ईश्वर की पूजा क्यों न करोगे ?

मैं-इसलिये कि यदि एक देवता प्रसन्न न हो तो दूसरा और दूसरा नहीं तो तीसरा....... कोई न कोई तो पिघलेगा। मेरा काम बन जाएगा।

महर्षि-क्या काम बन जाएगा ?

मैं-मुकद्दमा जीत जाऊँगा।

महर्षि-किससे मुकद्दमा जीत जाओगे ?

मैं-बड़े भाई से।

महर्षि-क्या दशरथ पुत्र भरत ने श्री रामचन्द्रजी के विरूद्ध मुकद्दमा जीत कर अयोध्या का राज्य प्राप्त किया था ?

मैं-चकरा गया। कोई उत्तर नहीं था। मौन साध गया।

महर्षि-इन देवी देवताओं के अतिरिक्त पुट्टपार्थी के साँई बाबा (अब स्वर्गवासी) शिरड़ी के साँई, आसाराम और कबीर पंथी रामपाल (दोनों जेल में हैं ; और उनकी जमानत भी नहीं हो रही।) इनकी भी पूजा ईश्वर मानकर करोगे यदि तुम्हारी मनोकामना पूर्ण नहीं हुई तो !

मैं-अवश्य ही करनी पड़ेगी। मुझे अपनी मनोकामना पूर्ति से मतलब है, कोई भी करे।

महर्षि-कब्र में मृत अवस्था में पड़ा कोई पीर-फकीर भी ?

मैं-बिलकुल।

महर्षि के इन प्रश्नों से मस्तिष्क में धुंधलका छाने लगा था। दिमाग गरम हो चला था। अन्दर ही अन्दर व्याकुलता बढ़ने लगी थी। इतने में ही महर्षि ने अगला प्रश्न दाग दिया-पता है पण्डे, पुजारी, महंत मनोकामना पूरी न होने पर क्या कहते हैं ?

मैं-हाँ पता है। ज्योतिषियों के पास भेजते हैं जो ग्रह लक्षणों के विकट जाल में फंसा देते हैं। ग्रह-नक्षत्रों की बाधा पार करने के लिये व्रत, उपवास, पूजा आदि कराते हैं। जमकर दान-दक्षिणा लेते हैं। फिर भी यदि मनोकामना पूरी नहीं होती तो 'भाग्य' का लिखा बताते हैं।

महर्षि-इसके अतिरिक्त, परिवार में मृत्यु होने पर 'तेरही का भोज, गया (बिहार) में पिण्ड-दान, प्रतिवर्ष श्राद्ध आदि भी करना पड़ेगा।

अब तक मेरा धैर्य टूट चुका था।

मेरी मनोदशा को भाँप कर महर्षि ने कहा वत्स ! सच्चे ईश्वर की खोज की कामना चौदह वर्ष की आयु में हुई। 21 वर्ष की आयु में गृहत्याग के पश्चात् चौदह वर्ष तक रात-दिन की सच्चे ईश्वर की खोज में, साधु संन्यासियों के पास समस्त भारत में भटकता रहा। तुम एक ही वार्तालाप में, थोड़े से उद्घाटन से ही घबरा गए। वेद सम्मत ईश्वर कोई उल्टी सीधी मनोकामना पूरी नहीं करता। मुकद्दमा नहीं जिताता। चोरी-चपाटी, अपहरण, बलात्कार, भ्रष्टाचार में सहायता नहीं करता। वह पुरूषार्थी-परिश्रमी, मेहनती सदाचारी मनुष्य बनने की प्रेरणा करता है। सत्कर्म करने की आज्ञा करता है। ऐसे मानव की वह पूरी-पूरी सहायता करता है। कष्ट पड़ने पर वह राह दिखाता है।

हे महर्षि ! आपने सही कहा। देव दयानंद शरणं गच्छामि।

www.thearyasamaj.org

अंधकार से ऊपर उठो

ले. -नरेन्द्र आहूजा 'विवेक' 602 जी एच 53 सैक्टर 20, पंचकूला

यजुर्वेद में मंत्र आया "**उद्वयं तमसस्परि स्व: पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योति-उत्तमम्**" अर्थात् हम लोगों ने **तमस** अंधकार या पापों के अंधकार से **उपरि** उपर उठकर **स्व: पश्यन्त** प्रकाश को देखा और परमप्रकाशक ईश्वर को पा लिया। आगे बढ़कर देखा तो अधिक तेज़ वाले प्रकाश को पाया और आगे बढ़े तो हर प्रकाशित व प्रकाशक वस्तु में उसी परमप्रकाशक प्रभु की प्राप्ति हुई।

मनुष्य जब तक अपने स्वार्थों के वशीभूत काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष की कलुषित भावनाओं से घिरा रहता है तब-तक वह प्रकाश को नहीं पा सकता। सत्य के प्रकाश को पाने के लिए मनुष्य को इन कलुषित भावनाओं के अंधकार और इसके जनक स्वार्थ की भावना को छोड़कर उपर उठना पड़ता है। जिस प्रकार रात्रि के उपरान्त सूर्योदय के पश्चात भी यदि कोहरा छाया हुआ हो तो हमें प्रकाशक सूर्य के दर्शन नहीं होते, उसी प्रकार प्रकाश को पाने के लिए इस कोहरे रूपी अंधकार अर्थात् अज्ञानता, अबोधता, स्वार्थ जैसी कलुषित भावनाओं को त्याग कर, उपर उठना होता है। यह उपर उठना भी एक क्रमिक विकास है जिस प्रकार घर की छत पर पहुंचने के लिए हमें सीढ़ी दर सीढ़ी उपर चढ़कर छत पर पहुंचना होता है ठीक उसी प्रकार अंधकार को छोड़कर प्रकाश की ओर जाना भी सीढ़ी दर सीढ़ी उपर चढ़ना होता है।

इसे समझने के लिए हमें अष्टांग योग के सूत्रों को भी समझना चाहिए। यम नियमों का पालन किए बिना आसन प्राणायाम करने का अपेक्षित लाभ नहीं मिल पाता और यम नियम धारण किए बिना केवल कुछ आसन प्राणायाम का प्रदर्शन करने से कोई व्यक्ति योगी नहीं कहलाता। ठीक उसी प्रकार अंधकार से उपर उठकर प्रकाश को पा लेने की यात्रा भी एक क्रमिक विकास की यात्रा है। इसमें पहले "**सवितर्दुरितानि परासुव**" अर्थात् अपने समस्त दुर्गुणों दुर्व्यसनों को छोड़कर हम "**यद् भद्रं तन्न आसुव**" अर्थात् अपने लिए शुभ व कल्याणकारी भावनाओं को प्राप्त करने की आशा कर सकते हैं।

तमसो मा ज्योतिर्गमय अंधकार से प्रकाश की ओर चलने की यात्रा का क्रम, अंधकार को छोड़ने से ही प्रारम्भ होता है। यहां **तमस** का अर्थ केवल अंधकार नहीं अपितु पाप व पापों का अंधकार भी है। पापों को छोड़े बिना पुण्य कर्म नहीं किए जा सकते। जैसे बर्तन को ठीक से साफ किए बिना उसमें शुद्ध जल भरकर भी पीने योग्य नहीं रह पाता ठीक उसी प्रकार पापों के पूर्ण त्याग के बिना पुण्य कर्म कर पाना संभव नहीं है। पापों का विष चाहे थोड़ी ही मात्रा में क्यूं ना हो वह मनुष्य के क्रमिक विकास में बाधक बनता है।

अंधकार से उपर उठकर जब हम प्रकाश को देखते हैं तो अक्सर हमारी आंखें चुंधिया जाती हैं जैसे अंधेरी सड़क पर अचानक सामने से आए वाहन की तीव्र रोशनी में कुछ दिखाई नहीं देता और हमारी स्थिति प्रकाश होते हुए भी पुन: एक अंधे सरीखी हो जाती है। ठीक उसी प्रकार जैसे अमावस्या की रात्रि में टिमटिमाते तारे को ही परम प्रकाश पुंज समझ लेना या फिर पूर्णिमा के चांद को भी समस्त प्रकाश का स्त्रोत मान लेना या फिर सूर्य को ऐसा समझ बैठना मनुष्य की अबोधता है। '**तमस उपरि**' में ये क्रमिक विकास उत्तरोतर उपर बढ़ते रहने की प्रेरणा जो इस वेद मंत्र में दी गई है वह हमें इन सभी प्रकाशित व प्रकाशक वस्तुओं से भी उपर ले जाने की प्रेरणा देती है। मील के पत्थरों को ही अपनी मंजिल मानकर रूक जाने वाले कभी अपने उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर पाते। यदि सीधे स्पष्ट शब्दों में कहें तो ये वेद मंत्र हमें गुरूडमवाद से बचने की प्रेरणा देते हुए उसी एक सर्वज्ञ को पाने की ओर इशारा करता है। यदि हम इसे और अधिक सरल शब्दों में समझे तो **तमस उपरि** में अंधकार से उपर उठकर प्रकाश को पाने की यह यात्रा उस परमपिता परमेश्वर तक पहुंचती है। जिससे इस संसार की प्रत्येक वस्तु प्रकाशित हो रही है।

आइये इस वेद मंत्र की भावना को समझकर अंतर्यात्रा को प्रारम्भ करें और अपने ही अंदर अपनी आत्मा में विराजमान उस सर्वान्तर्यामी परमपिता परमेश्वर को अनुभूत कर उसके प्रकाश से प्रकाशित हो जाएँ और अंधकार तमस रूपी कलुषित भावनाओं से सदा सर्वदा के लिए मुक्ति पा लें।

गांधी आर्य हाई स्कूल (एडिड), बरनाला में वार्षिक स्पोटर्स मीट का आयोजन

आर्य समाज बरनाला के वार्षिक उत्सव पर आर्य जनों को सम्मानित करते हुये आर्य समाज के प्रधान श्री सूर्यकान्त जी शोरी एवं महामंत्री श्री भारत भूषण जी मेनन।

गांधी आर्य हाई स्कूल एवं गांधी आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल बरनाला में "वार्षिक स्पोर्टस मीट" का आयोजन किया गया। प्रोग्राम का आरम्भ आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यकारी सदस्य भारतभूषण मैनन तथा आर्य समाज के प्रधान डा० सूर्यकान्त शोरी ने ध्वजारोहण से किया। प्रोग्राम के मुख्य अतिथि सुनील बांसल भट्ठे वाले ने विजयी विद्यार्थियों को परितोषक वितरित किए।

वार्षिक स्पोर्टस मीट सुनील बांसल की माता स्वर्गीय श्रीमती पुष्पा देवी की स्मृति में इस वर्ष आयोजित किया गया। स्कूल प्रिंसीपल राम कुमार सोबती ने सुशील बांसल के परिवार की समाज सेवा, स्कूलों के प्रति सेवा भावना का वर्णन करते हुए आए हुए अतिथियों का स्वागत किया। स्कूल के डी. पी. चरणजीत शर्मा और बलविन्द्र सिंह ने प्रैस को जानकारी देते हुए बताया कि स्पोटर्स मीट में दौड़ों में 50 मीटर, 100 मीटर, 200 मीटर, 400 मीटर, 800 मीटर आयोजन किया। जिसमें स्कूल के लड़कों व लड़कियों ने भाग लिया। लांग जम्प के चार वर्गो में सीनियर, हाई, मध्यम व प्राईमरी वर्ग के लड़के व लड़कियों ने भाग लिया। डिस्कस थ्रो. में भी भिन्न-भिन्न वर्गों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रत्येक विद्यार्थी तीन से अधिक वर्गों व खेलों में भाग नहीं ले सकता ऐसा नियत किया गया। जो विद्यार्थी तीनों में प्रथम आया उसे बैस्ट एथलीट घोषित किया गया। जूनियर वर्ग में लड़कियों में जूही, सीनियर वर्ग लड़कियां राधा रानी, सैकण्ड्री वर्ग लड़कियों में शिल्पी रानी, जूनियर वर्ग लड़कों में महिताव आलम, सीनियर वर्ग लड़कों में हरजिन्द्र सिंह, सैकण्डरी वर्ग लड़कों में सूरज प्रताप तथा जोत सिंह को बैस्ट एथलीट घोषित किया गया तथा विशेष पुरस्कृत किया गया। संस्था की ओर से मुख्य अतिथि सुनील बांसल को भी सम्मान चिन्ह देकर सम्मानित किया। विद्यार्थियों को भारतभूषण मैनन तथा सुनील बांसल ने सम्बोधित करते हुए विजयी विद्यार्थियों को बधाई दी। राष्ट्र गान के साथ प्रोग्राम समाप्त हुआ। प्रोग्राम में सभी अध्यापकों ने विशेष भूमिका निभाई।

-राम कुमार सोबती प्रिंसीपल

www.thearyasamaj.org

युवा चरित्र निर्माण एवं वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर के वार्षिक उत्सव पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी को सम्मानित करते हुये महात्मा चैतन्य मुनि जी। साथ में खड़े हैं आर्य समाज के प्रधान श्री रणजीत आर्य। चित्र दो में जिला पुलिस महानिदेशक श्री सुरेन्द्र कुमार कालिया सपत्नीक हवन यज्ञ करते हुये।

आर्य समाज मंदिर भगत सिंह कालोनी जालन्धर का 24वां वार्षिक उत्सव दिनांक 19 दिसम्बर से 25 दिसम्बर 2016 तक बड़े उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस वार्षिक उत्सव का समापन रविवार को पूर्णाहुति के साथ हुआ जिसमें मुख्य यजमान सुरिन्द्र कुमार कालिया जिला महानिदेशक पंजाब, श्री ललित मित्तल, श्रीमती नीना मित्तल, भगीरथ उपाध्याय, पवन मल्होत्रा, प्रवीण बजाज, राहुल मल्होत्रा, हरमिंदर सिंह बेदी, डेवियट के प्रिं. डॉ. मनोज शर्मा, श्री सुभाष आर्य, श्री रजनीश सचदेव थे।

यज्ञ के ब्रह्मा आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान् महात्मा चैतन्यमुनि जी थे। पं. शिवा शास्त्री एवं गुरूकुल करतारपुर के ब्रह्मचारियों ने मन्त्रोच्चारण किया। विधायक के.डी. भण्ड़ारी, श्री अनिल शर्मा, महात्मा चैतन्यमुनि, आर्य समाज के प्रधान श्री रणजीत आर्य, हर्ष लखनपाल ने अपने करकमलों के द्वारा ओ३म् की पताका फहराई गई। युवा चरित्र निर्माण सम्मेलन के अध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी थे। इस अवसर पर श्रीमती सुशीला भगत, डा. नरेश धीमान, आचार्य सानन्द, महात्मा चैतन्यमुनि ने अपने उपदेशों में युवाओं के चरित्र के विषय में उनका भविष्य कैसा हो, उनकी दिनचर्या कैसी हो? आदि महत्वपूर्ण जीवन उपयोगी बातें बताई। सोनू भारती, शिवानी आर्या, माता सत्याप्रिया याति, भजन सम्राट पं. दिनेश आर्य पथिक ने बड़े ही मनमोहक भजन प्रस्तुत कर कार्यक्रम को भतिमय बना दिया। आर्य समाज के प्रधान रणजीत आर्य ने आए हुए सभी यजमानों, अतिथियों तथा इलाका निवासियों को विशेष रूप से सम्मानित किया। इस मौके पर उपस्थित भूपेन्द्र उपाध्याय, रमेश मुटरेजा, जितेन्द्र आर्य, सुदर्शन आर्य, रसिक वर्मा, नेहा वर्मा, हर्ष लखनपाल, चौधरी हरीशचन्द्र, राकेश बावा, ईश्वर चन्द्र रामपाल, सुरेन्द्र अरोड़ा, स्वर्ण शर्मा, कुबेर शर्मा, अश्वनी डोगरा, वरूण शर्मा, राजीव कुन्द्रा, सुनील मल्होत्रा, ललित मोहन, सतपाल मल्होत्रा, अंकित गोयल, रोहित सूद, हिंदपाल सेठी, मोहनलाल, मनप्रीत ठाकुर, बलराज मिश्रा, राजीव कौड़ा, विजय ठाकुर, ओम प्रकाश मैहता, रणजीत खन्ना, प्रो. रमा चौधरी, राहुल शर्मा, नवीन चावला, नवीन आर्य, भारत भूषण, सुशील शर्मा, राजेश आर्य, लवलीन कुमार, प्रोमिला अरोड़ा, एवं समस्त आर्य समाजों से पधारे पदाधिकारियों, सभी इलाका निवासियों एवं धर्म प्रेमी सज्जनों का आर्य समाज के प्रधान रणजीत आर्य ने धन्यवाद किया।

हर्ष लखनपाल
महामन्त्री आर्य समाज

आर्य समाज बस्ती दानिशमंदा का 37वां वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज वेद मंदिर बस्ती दानिशमंदा के वार्षिक उत्सव पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्य सभा कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी को सम्मानित करते हुये जबकि दूसरे चित्र में ध्वजारोहण करते हुये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी। उनके साथ खड़े हैं आर्य समाज वेद मंदिर भार्गव नगर के महामंत्री श्री सुदेश कुमार जी एवं आर्य समाज के सदस्य।

आर्य समाज वेद मन्दिर लसूड़ी मोहल्ला बस्ती दानिशमन्दा जालन्धर का 37वां वार्षिक उत्सव 18 दिसम्बर से 25 दिसम्बर 2016 तक बड़े हर्षोल्लास एवं उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस असवर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक पं विजय कुमार शास्त्री जी के प्रवचन एवं सरदार सुरेन्द्र सिंह गुलशन के भजन होते रहे। 18 दिसम्बर से 24 दिसम्बर तक प्रात: 5:30 से 7:00 बजे तक प्रभातफेरियों का आयोजन किया गया। 24 दिसम्बर शनिवार को दोपहर 2:00 बजे शोभायात्रा निकाली गई। इसमें पं. मनोहर लाल आर्य, पं. विजय कुमार शास्त्री, श्री निर्मल आर्य, श्री वेद प्रकाश, श्री राजकुमार एवं आर्य समाज वेद मन्दिर के सभी अधिकारियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। 25 दिसम्बर रविवार को मुख्य कार्यक्रम का शुभारम्भ हवन यज्ञ के साथ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा पं. विजय कुमार शास्त्री, पं. सुरेश शास्त्री एवं पं. मनोहर लाल आर्य ने यजमान दम्पत्तियों से आहुतियां डलवाई तथा आशीर्वाद प्रदान किया। यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात मुख्य कार्यक्रम आरम्भ हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कोषाध्यक्ष श्री सुधीर कुमार शर्मा जी ने अपने करकमलों से ध्वजारोहण किया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वरिष्ठ उपप्रधान श्री बाबू सरदारी लाल जी आर्यरत्न की अध्यक्षता में आरम्भ हुआ। सरदार सुरेन्द्र सिंह गुलशन एवं श्री सुरेन्द्र कुमार जी बस्ती बावा खेल ने अपने मधुर भजनों के द्वारा वातावरण को सुन्दर बना दिया। पं विजय कुमार शास्त्री एवं पं. सुरेश कुमार शास्त्री जी ने अपने प्रवचनों के द्वारा महर्षि दयानन्द एवं स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा बताए गए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। अंत में कार्यक्रम के अध्यक्ष बाबू श्री सरदारी लाल जी आर्यरत्न ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सभी को प्रेरणा देते हुए आर्य समाज के प्रचार एवं प्रचार पर बल देने को कहा। आर्य समाज के प्रधान श्री यशपाल ने सभी आए हुए आर्य महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद किया और अपने सहयोगियों के साथ मिलकर बाबू श्री सरदारी लाल जी आर्यरत्न को एवं मुख्य अतिथि श्री सुधीर शर्मा जी को सम्मानित किया। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ एवं उपस्थित आर्यजनों ने लंगर ग्रहण किया। इस अवसर पर सर्वश्री सुदेश आर्य महामन्त्री वेद मन्दिर भार्गव नगर, कमल किशोर, राजकुमार प्रधान वेद मन्दिर भार्गव नगर, सम्मा राम प्रधान वेद मन्दिर गढ़ा, वेद आर्य महामन्त्री आर्य नगर, राजिन्द्र विज मन्त्री दयानन्द मठ मोहल्ला, सुरेन्द्र कुमार, सतपाल प्रधान आर्य नगर, निर्मल कुमार मन्त्री बस्ती बावा खेल, जयचन्द प्रधान संत नगर तिलक राज गांधी नगर, हरिप्रकाश मुख्य यजमान, आदि महानुभाव उपस्थित थे।

कमल भारती महामन्त्री

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।